विचार बिन्दु

अनुभव की पाठशाला में जो पाठ सीखे जाते हैं, वे पुस्तकों और विश्वविद्यालयों में नहीं मिलते। –अज्ञात

कलाकार को अपना काम करने दीजिए!

मैं इस बात को बहुत ग़ौर और व्यथा से नोट कर रहा हूं कि उन बातों से जो हमें पसंद नहीं हैं, हमारे आहत होने की प्रवृत्ति बहुत तेज़ी से बढ़ती और बहुत बार उग्र रूप धारण करती जा रही है। यथार्थ यह है कि जीवन में और दुनिया में सब कुछ कभी ऐसा नहीं होता जिसे हम पसंद करें। बहुत कुछ ऐसा होता है जिसे हम पसंद नहीं करते हैं, लेकिन इसके बावज़ूद उसे हम सहन करते हैं। हम यह जानते हैं कि सारी दुनिया हमारे इशारों पर नहीं नाच सकती और न सारी दुनिया वैसी हो सकती है जैसा हम चाहते हैं कि वह हो। इससे भी बड़ा सच यह है कि औरों की छोड़िये, हम ख़ुद पूरी तरह वैसे नहीं बन पाते हैं जैसे हम होना या बनना चाहते हैं। इसके बावज़ूद हम ख़ुद को भी झेलते ही हैं। यह मानकर कि बकौल निदा फ़ाज़ली, कभी किसी को मुकम्मल जहां नहीं मिलता।

लेखक और कलाकार सदा एक आदर्श दुनिया का ख़्वाब देखते हैं। वे अपने समय और समाज की पड़ताल करते हैं, उसकी आलोचना करते हैं और एक ऐसी तस्वीर बनाते हैं जिसमें क्या है और क्या होना चाहिए दोनों चीज़ें शामिल होती हैं। अगर वर्तमान से असंतोष न हो तो कोई बेहतर भविष्य की कल्पना ही क्यों करे? अलबत्ता कलाकारों का लहज़ा, उनके माध्यम, उनकी शैली अलग–अलग होती है। तुलसीदास अलग लहज़े में अपनी बात कहते हैं तो कबीर दास दूसरी तरह से अपनी बात कहते हैं। रचनाकार बहुत दफा अपनी बात कहने के लिए व्यंग्य का भी प्रयोग करते हैं। व्यंग्य तीखा भी हो सकता है, मारक भी। वह आपको गुदगुदाता नहीं परेशान करता है, आहत करता है, विचलित करता है। व्यंग्य करने वाला चाहता भी यही है। कबीर दास जब मुल्ला या पण्डित की बात करते हैं तो वे ऐसा ही करते हैं। अगर हम अपने हिंदी साहित्य की बात करें तो आधुनिक काल में भी भारतेंदु हरिश्चन्द्र से जिस व्यंग्य लेखन का क्रम प्रारम्भ होता है वह आज तक बना हुआ है। हम क्योंकि अपनी चर्चा साहित्य तक सीमित नहीं रख रहे हैं इसलिए बहुत सारे लेखकों को स्मरण करना प्रासंगिक नहीं होगा, लेकिन जब भी व्यंग्य की बात करेंगे, हरिशंकर परसाई ज़रूर याद आएंगे। याद निराला भी आएंगे, नागार्जुन भी और श्रीलाल शुक्ल भी। और भी बहुत सारे रचनाकार याद आएंगे। सोचने की बात यह है कि जब ये अपने समाज, अपने देश, अपने परिवेश, अपने धर्म आदि पर कोई टिप्पणी करते हैं तो क्या ये कोई ग़लत काम करते हैं? क्या इनके लेखन से किसी का अपमान होता है? क्या किसी को यह सवाल पूछना चाहिए कि कबीर ने मुल्ला या पण्डित को केंद्र में रखकर कुछ क्यों कहा–लिखा? याद किया जाए कि शरद जोशी का एक प्रख्यात व्यंग्य है जिसमें वे खुलकर राजीव गांधी का उपहास करते हैं, लेकिन उससे कोई आहत नहीं होता। कॉंग्रेसी भी नहीं।

कोई अगर यह सोचता है कि देश के बारे में सोचना उसी का एकाधिकार है तो यह उसके सोच की सीमा है, और सीमित सोच को चुनौती दी जानी चाहिए। अगर कोई समाज अपने कलाकारों को अभिव्यक्ति की आज़ादी नहीं देता है उसे अपने आपको सभ्य समाज कहने-मानने का कोई हक़ नहीं है।

और जो काम लेखक अपनी कलम से करता है वही काम अन्य कलाकार अपनी–अपनी विधाओं के औज़ारों से करते हैं। संवेदनशील और समझदार लोग उनके व्यंग्य को समझते और सराहते हैं। यह समय स्टैण्ड अप कॉमेडी का है और किसी भी कॉमेडियन को यह हक़ है कि उसे जो मुद्दे ज़रूरी लगते हैं वह उन पर अपनी बात कहे। उसके औज़ार अलग होते हैं लेकिन काम तो अंततः वह भी वही करता है जो एक लेखक करता है। वैसे, किन्हीं दो विधाओं और किन्हीं दो कलाकारों की कोई तुलना हो ही नहीं सकती। ऐसा प्रयास करना भी नहीं चाहिए। जो लोग भारतीय स्टैण्ड अप कॉमेडी परिदृश्य से परिचित हैं उनके लिए वीर दास का नाम अनजाना नहीं हो सकता। देहरादून में जन्में और शिमला तथा दिल्ली में पढ़े वीर दास समकालीन स्टैण्ड अप कॉमेडी के चमकते सितारे हैं। जो लोग हर कॉमेडियन को हिकारत की निगाह से देखने के अभ्यस्त हैं वे यह भी जान लें कि वीर दास इलेनॉए के नॉक्स कॉलेज में चार बरस और हार्वर्ड विश्वविद्यालय में भी एक वर्ष पढ़ चुके हैं। उन्होंने अर्थशास्त्र और अभिनय की पढ़ाई की है। न केवल यह बल्कि यह भी कि अपने हार्वर्ड विश्वविद्यालय में उन्होंने मॉस्को आर्ट्स थिएटर के साथ कई नाटकों में भी काम किया है। इन दिनों हमारे यहां इन्हीं वीर दास की बहुत चर्चा है। चर्चा की वजह उनका मात्र छह मिनिट का एक वीडियो क्लिप है जो खुद उन्होंने अपने यू ट्यूब चैनल पर साझा किया है। यह वीडियो असल में वॉशिंगटन डीसी के विख्यात जॉन एफ कैनेडी सेण्टर में हुए उनके एक शो का है जिसमें वे एक एकालाप – मोनोलॉग– का वाचन कर रहे हैं। भारतीय मीडिया में इस एकालाप को कविता कहा गया है, हालांकि यह कविता नहीं है। इस एकालाप का शीर्षक है – 'आई कम फ्रॉम टू इण्डियाज़' अर्थात मैं दो भारत से आता हूं।

खुद वीर दास ने अपने इस एकालाप का परिचय देते हुए कहा है; यह वीडियो भारत के दोहरेपन को लेकर है। दो पक्ष जो एक दूसरे से बिल्कुल अलग हैं, जैसा कि हर देश का एक अच्छा और एक बुरा पक्ष होता है, और यह बात कोई रहस्य नहीं है।; इस एकालाप में देश के एक दर्ज़न अंतर्विरोधों को उजागर किया गया है। लेकिन इस एकालाप ने, बल्कि ईमानदारी की बात यह है कि इस एकालाप के एक या डेढ़ वाक्यों ने, 'कुछ' लोगों को इतना आहत किया है कि वे बहुत मुखर होकर इसका विरोध कर रहे हैं। यहां तक कि फ़ेडरेशन ऑफ वेस्टर्न इण्डियन सिने एम्प्लाइज़ (एफ़डब्ल्यूआईसीई) के अध्यक्ष ने तो यह भी कह दिया है कि उनकी संस्था के सदस्य वीर दास के साथ काम नहीं करेंगे। उन्होंने दम्भपूर्वक कहा है कि; वीर दास को किसी भी प्लेटफॉर्म पर काम नहीं करने दिया जाना चाहिए। मैं सभी निर्माताओं से कहूंगा कि उनके साथ न तो सहयोग करें और न ही काम करें।; वीर दास ने इस एकालाप में ऐसा क्या कह दिया है जिससे 'कुछ' लोग बहुत आहत हैं? एक शिकायत तो यह की जा रही है कि उन्होंने विदेश में जाकर देश की छवि धूमिल की है। सोचने की बात यह है कि सूचना क्रांति के इस दौर में क्या कोई भी बात देश की सीमाओं तक सीमित रह सकती है? फिर, क्या हमें केवल उजला पहलू ही देखना और दिखाना चाहिए? सारी कुरूपताओं को कार्पेट के नीचे छिपा देना चाहिए? कुछ उसी तरह जैसे एक विदेशी नेता के आगमन पर एक शहर के बाह्य भाग की कुरूपता को छिपाने के लिए बड़े–बड़े पर्दे टांग दिये गए थे? बेशक, हम सार्वजनिक रूप से अपनी विरूपताओं का दिखावा नहीं करते हैं और हमारा हर मुमकिन प्रयास यही होता है कि हम अपने बेहतर का प्रदर्शन करें, लेकिन बहुत बार यह भी ज़रूरी हो जाता है कि हम बेहतर और बदतर दोनों की बात करें। वीर दास ने अपने एकालाप में यही किया है, और मैं बेझिझक यह कह सकता हूं कि ऐसा करने का उन्हें पूरा अधिकार था और है। हममें से किसी को यह हक़ नहीं है कि एक स्वतन्त्र देश के नागरिक की अभिव्यक्ति की आज़ादी को चुनौती दें।

मैं अपनी बात फिर वहीं लाता हूं। अगर सच कहने से किसी की छवि विकृत होती है तो यह 'अपराध' सारे बड़े रचनाकारों–कलाकारों ने किया है। इस सोच के चलते तो न महान कार्टूनिस्ट शंकर अपनी विख्यात पत्रिका 'शंकर्स वीकली' निकाल सकते थे और न कोई कुंदन शाह 'जाने भी दो यारों' जैसी फ़िल्म बना सकता था। यह नहीं भूला जाना चाहिए कि नागार्जुन और हरि शंकर परसाई इसी देश और समाज में रहे हैं और ससम्मान रहे हैं। भले ही किसी अपराधी मनोवृत्ति वाले ने परसाई पर जान लेवा हमला किया, उसे सराहा किसी ने नहीं, और आज यह माना जाता है कि परसाई का लेखन अपने समय के भारत की प्रामाणिक छवि प्रस्तुत करता है। वे हमारे सर्वाधिक सम्मानित रचनाकारों में से एक हैं।

एक स्वस्थ और संज़ीदा समाज वही होता है जो भिन्न–भिन्न स्वरों को सम्मान देता है। अगर आप किसी की बात से सहमत न भी हों तो उसे अपनी बात कहने की आज़ादी दें, यही अपेक्षा की जाती है। कोई भी रचनाकार इसलिए अपने रचनाकर्म में प्रवृत्त नहीं होता है कि वह किसी की छवि को आहत करना चाहता है! देश का खून हम सबकी नसों में समान रूप से प्रवाहित होता है। देश भक्ति पर कुछ लोगों का एकाधिकार हो ही नहीं सकता। कोई अगर यह सोचता है कि देश के बारे में सोचना उसी का एकाधिकार है तो यह उसके सोच की सीमा है, और सीमित सोच को चुनौती दी जानी चाहिए। अगर कोई समाज अपने कलाकारों को अभिव्यक्ति की आज़ादी नहीं देता है उसे अपने आपको सभ्य समाज कहने–मानने का कोई हक़ नहीं है। हम किसी के कहे–लिखे–रचे से असहमत हो सकते हैं, अपनी असहमति व्यक्त करने का भी हमें अधिकार है, लेकिन यह ध्यान रखना बहुत ज़रूरी है कि हमारा वह अधिकार दूसरों की आज़ादी को बाधित न करे।

–अतिथि सम्पादक,
डॉ. दुर्गाप्रसाद अग्रवाल
(शिक्षाविद और साहित्यकार)

डा.बी.डी.कल्ला अनुभवी शिक्षामन्त्री के सामने राजस्थान शिक्षा की चुनौतियां

राजस्थान की राजनीति में सुलझे हुए अनुभवी और वरिष्ठ राजनेता बुलाकी दास कल्ला राजस्थान के कांग्रेस मन्त्री मण्डल में फेर बदल के बाद पांचवीं बार शिक्षामन्त्री बने हैं इससे उनके समर्थकों में थोड़ी निराशा है। उन्हें उम्मीद थी कि उनके कद को ध्यान में रखकर कल्ला जी को कोई भारी और महत्वपूर्ण विभाग की जिम्मेदारी सौंपी जाएगी । सम्भवतः शिक्षाविभाग में तबादलों में भ्रष्टाचार के आरोपों के तूफान को थामने के लिए उन्हें चुना गया है।

4 अक्टूबर 1949 को जन्मे डॉ बीडी कल्ला, बीकानेर निवासी राजस्थान के एक मात्र राजनीतिज्ञ हैं जो प्रायः विवादों से परे रहकर शान्त भाव से अपना काम करने के लिए मशहूर हैं। बीकानेर पश्चिम से विधायक चुने गए कल्ला ने बीएससी, एमए (अर्थशास्त्र), एलएलबी और पीएच.डी तक की शिक्षा ग्रहण की है।

डॉ. बी.डी. कल्ला ने अपने करियर की शुरुआत 1974 में बीकानेर के बीजेएस रामपुरिया कॉलेज में व्याख्याता के रूप में की थी। फिर उन्होंने राजनीति की ओर रुख किया और 6 बार विधायक बन चुके हैं।

श्री कल्ला ने 1990 और 2003 तक माध्यमिक शिक्षा मंत्री के रूप में कार्य किया और शिक्षा क्षेत्र में अपने पिछले अनुभव के साथ अपने पद के लिए न्याय किया। डॉ. बी.डी. कल्ला जनवरी 2004 से जनवरी 2006 तक राजस्थान विधान सभा में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के सक्रिय सदस्य के रूप में विपक्षी दल के नेता थे । उन्होंने राजस्थान प्रदेश कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष और चौथे वित्त आयोग के अध्यक्ष के रूप में भी कार्य किया। उन्होंने कहा कि उनका प्रयास रहेगा कि उनके अनुभव का लाभ प्रदेश की जनता को मिले। उन्होंने कहा कि उनके पूर्व कार्यकाल में शुरू की गई विद्यालय विकास समितियों को और अधिक सक्रिय तथा प्रभावी बनाने का प्रयास किया जाएगा जिससे स्कूल प्रबंधन को सुदृढ़ किया जा सके। राज्य में महिला शिक्षा को आगे बढ़ाने के लिए उचित कदम उठाए जायेंगे। डॉ. कल्ला ने कहा कि उनके पिछले कार्यकाल में कक्षा 1 से 3 तक अंग्रेजी को अनिवार्य विषय बनाया गया था तथा ये हर्ष का विषय है कि वर्तमान में राष्ट्रिपता महात्मा गांधी के नाम से प्रदेश में कई स्थानों पर अंग्रेजी माध्यम के राजकीय विद्यालय संचालित हो रहे हैं जिनमें समाज के साधारण परिवारों से आने वाले विद्यार्थी भी शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं। उनका कहना था कि राजस्थान एक ग्रामीण प्रदेश है इसलिए ग्रामीण शिक्षा को मज़बूत करना बेहद जरूरी है जिससे गांव ढाणियों के छात्र भी चिकित्सक, इंजीनियर व प्रशासनिक अधिकारी बन सकें। स्वर्गीय राजीव गांधी की सोच से मुख्यमंत्री की पहल पर सरकार ने महात्मा गांधी अंग्रेज़ी माध्यम विद्यालयों की शुरुआज की।

नए शिक्षा मंत्री के रूप में दायित्व ग्रहण करने के बाद डॉक्टर बी. डी. कल्ला के सामने जमीनी धरातल पर शिक्षा विभाग के सामने गंभीर चुनौतियों का अंबार लगा हुआ है। सरकार के सामने सबसे बड़ी चुनौती शिक्षा विभाग में भ्रष्टाचार की जो लहर चल रही है उसे रोकने की है। स्वयं मुख्यमंत्री ने शिक्षक सम्मान समारोह में शिक्षकों से इसकी ताकीद करवा दी थी जाहिर सी बात है आम धारणा और शिक्षकों की हामी ने यह सिद्ध कर दिया कि राजस्थान में तबादला एक उद्योग के रूप में बुरी तरह हावी है। कल्ला साहब अपने गहरे और लम्बे प्रशासनिक अनुभव के साथ शिक्षा विभाग को सुनिश्चित दिशा दे सकते हैं । राजस्थान में अनेक सरकारों ने शिक्षक तबादलों के विषय में नीतियां तो खूब बनाई हैं लेकिन क्रियान्वित कभी नहीं हुई।

इसी तरह शिक्षा विभाग के सामने दूसरी गंभीर समस्या रिक्त पदों की है जो रिक्त पद भरने के बयान दिए जा रहे हैं। हकीकत उससे भी कहीं बड़ी है करोना काल में राजस्थान के सरकारी स्कूलों में नामांकन भारी मात्रा में बढा है जिससे प्राइवेट स्कूल बुरी तरह चपेट में आए हैं। कल्ला साहब को देखना पड़ेगा कि राजस्थान में सरकारी और प्राइवेट स्कूलों के बीच छात्र नामांकन का संतुलन बना रहे। अभी तो जो 8–10 लाख नए बच्चे प्राइवेट स्कूल छोड़ कर सरकारी स्कूलों में आए हैं उनके लिए ही सरकार के पास शिक्षक नहीं है। सरकार लगातार नए पद सृजित कर उन्हें भरने का दावा तो करती है लेकिन क्या सरकार की आर्थिक माली हालत ऐसी है कि वे लगातार नए पदों का सृजन करते रहें और उनका वेतनमान समय पर देते रहें। यह एक असंभव टास्क है जो किसी भी सरकार के बूते का नहीं है। नए शिक्षा मंत्री जी को इस दिशा में सार्थक और सटीक नीति बनाने की आवश्यकता है।

राजस्थान में सरकार ने अंग्रेजी स्कूल खोलने का काम शुरू कर दिया है भले ही लोगों बड़ी संख्या में अपने बच्चों को वहां एडमिशन करा रहे हों लेकिन हकीकत यह है कि अंग्रेजी पर साअधिकार वार्तालाप करने की क्षमता हिंदी माध्यम के शिक्षकों के पास नहीं होती है। यूं भी आजकल जो बच्चे वहां पढ़ने जाते हैं वे लौटकर जब आते हैं तो यह शिकायत करते हैं कि गुरुजी अंग्रेजी में बात ही नहीं करते। सरकार का अंग्रेजी स्कूलों के प्रति यह मोह तो छुटने वाला नहीं है तो फिर इस दिशा में गम्भीरता से व्यवस्था करने की आवश्यकता है।

समय की मांग कहकर अंग्रेजी स्कूलों पर मोहर लगाई जा रही है जो सरकारी अंग्रेजी स्कूल खुल रहे हैं वहाँ पूरी क्षमता और योग्यता के आधार शिक्षकों का चयन किया जाए। नवाचार के रूप में सरकार प्रयोग करें और प्राइवेट स्कूलों में जो अच्छे अंग्रेजी में दक्ष और बोलने वाले शिक्षक हैं उन्हें प्रतिनियुक्ति पर सरकारी स्कूलों में लगा कर अन्य शिक्षकों के लिए वातावरण उपलब्ध कराए।

पिछले कुछ वर्षों में सरकारी स्कूलों में आईटी के नाम पर संस्था प्रधानों पर भारी बोझ डाल दिया गया है। मैं ऐसे सैकड़ों संस्था प्रधानों को जानता हूं जो अपना शैक्षिक योगदान देने के स्थान पर स्कूलों में केवल सूचनाओं को कंप्यूटर पर अपलोड करने के काम में लगे रहते हैं। वे दिन रात इस बात का रोना रोते हैं कि सरकारी अफसर कार्यालय में बैठकर दिन–रात स्कूल के संस्था प्रधानों को हड़कातें रहते हैं और वह हर बात पर उन्हें नोटिस देने की धमकी देते हैं। इसका सबसे बुरा प्रभाव बच्चों की शिक्षा पर पड़ रहा है। जो संस्था प्रधान स्वयं शिक्षकों को पढाने–लिखाने के लिए प्रेरित कर सकता है वह उल्टे वह तीन–चार अन्य शिक्षकों को भी इन सूचनाओं को अपलोड करने में बिजी कर देता है, नतीजा स्कूल का शैक्षिक स्तर निरंतर प्रभावित होता रहता है। शिक्षा मन्त्री जी इस दिशा में सख्ती से निर्देश जारी करें। सरकारी अफसरों ने नवाचारों के नाम पर कम्पूटरीकृत सूचनाओं का अंध कूप खोद डाला है। कागज के घोड़ों से कभी मैदान फतह नहीं होते हैं उसके लिए जंगे मैदान में कुशल घुड़सवार और काठयावाड़ी घोड़ों की जरूरत होती है। राज्य के शिक्षा विभाग के पास समर्पित शिक्षकों की फौज है लेकिन उन्हें सही काम तो करने दें।

शिक्षामन्त्री जी का यह संकल्प अच्छा है कि आगामी समय में विद्यालयों को और संवारा जायेगा तथा विभिन्न शैक्षिणक नवाचारों के माध्यम से प्रदेश में शिक्षा को आगे बढ़ाने तथा समाज की अंतिम पंक्ति में खड़े व्यक्ति के बच्चे को गुणवत्तापुर्ण शिक्षा सुलभ करवाने का कार्य किया जायेगा।

राजेन्द्र मोहन शर्मा
साहित्यिकार, शिक्षाविद और चिन्तक

नवलगढ़ बीडीओ के बेटे ऋतिक ने कोटडी धाम के विकास के लिए 8 लाख रूपए दिए

कोलसिया, (निसं)। मलसीसर निवासी व जयपुर प्रवासी नवलगढ़ में सेवारत विकास अधिकारी अनिल सोनी के बेटे ऋतिक भामा ने अपनी शादी के बाद कोटडी धाम विकास के लिए आठ लाख रूपए ट्रस्ट को दिए हैं। ट्रस्ट अध्यक्ष रामकुमार तोसावड ने बताया कि ऋतिक की शादी हाल ही में जयपुर के एंजेल रिसोर्ट में सरदारशहर निवासी श्यामसुंदर कटेल की पुत्री कोमल के साथ 21 नवम्बर को हुई थी, देवी देवता पूजन की रश्म अदा करने के लिए आस्थास्थल कोटडी आए जहां पर आलीशान बडे हॉल निर्माण करने के लिए आठ लाख रुपए दिए। गुढागौडजी अध्यक्ष ओमप्रकाश सोनी, महेश जेजुसर, सांवरमल डांवर, श्यामसुंदर कोलसिया, मनोज तोगडा, गिरधारी लाल तोसावड, प्रभुदयाल छापरवाल, नरेश नारनोली, श्रीराम भामा, विनोद खेतडी आदि ने तदर्थ बधाइयां दी है।

■ आलीशान बडे हॉल निर्माण करने के लिए दिए आठ लाख रूपए

नवलगढ में सेवारत विकास अधिकारी अनिल सोनी के बेटे ऋतिक भामा ने अपनी शादी के बाद कोटडी धाम विकास के लिए आठ लाख रूपए ट्रस्ट को दिए ।

प्रियंका गांधी वाड्रा सवाई माधोपुर पहुंची

सवाई माधोपुर, (निसं)। कांग्रेस की राष्ट्रीय महासचिव प्रियंका गांधी वाड्रा रविवार को कड़ी सुरक्षा व्यवस्था के बीच सवाई माधोपुर पहुंची। उनका काफिला कड़ी सुरक्षा व्यवस्था के बीच सवाई माधोपुर की सड़कों पर हो करके गुजरा। जहां चप्पे–चप्पे पर पुलिस सुरक्षा व्यवस्था तैनात की गई थी । पुलिस सुरक्षा व्यवस्था एसपी राजेश सिंह के नेतृत्व में की गई । दर्जनों गाड़ियों का काफिला एक साथ जब सवाई माधोपुर होते हुए रणथंभौर से होकर गुजरा तब यातायात को भी एक तरफा ही रोका गया। प्रियंका गांधी वाड्रा अपने निजी यात्रा के दौरान रणथंभौर पहुंची । रणथंभौर के शेर बाघ होटल पहुंची प्रियंका गांधी वाड्रा का होटल मैनेजमेंट की तरफ से भव्य रूप में स्वागत किया गया। प्रियंका गांधी वाड्रा रणथंभौर के होटल शेर बाघ में तीन दिवस तक रहेगी । वहीं इस दौरान रणथंभौर नेशनल पार्क का प्रियंका गांधी वाड्रा ने भ्रमण किया । बाघिन सहित अन्य वन्यजीवों की अठखेलियां देखी। बाघ टी 101 व बाघिन एरोहेड के भी दीदार किये।

पेट की खातिर कबाड़ चुनने में बीत रहा बचपन

हर साल बच्चों को बालश्रम मुक्त करने का अभियान महज कागजों में ही पूरा हो जाता है

पावटा, (निसं)। बच्चों के हाथ में जिस उम्र में कॉपी–कलम और किताब होनी चाहिए, उस उम्र में अगर बच्चे सड़कों पर भीख मांगते या कबाड़ चुनते नजर आयें तो यह हमारे सभ्य समाज, समाजसेवियों और सरकारों के लिए बड़ी ही शर्मनाक घटना है।

यह घटनाएं तब और भी शर्मनाक हो जाती है जब केन्द्र से लेकर राज्य सरकार गरीब बच्चों को अच्छी तालिम तथा गरीबों की आर्थिक स्थिती में सुधार का दावा कर रही हो। यह तस्वीर पावटा उपखंड के सर्विस रोड की है जिसमें बच्चे पढ़ने–लिखने की उम्र में सड़कों पर कबाड़ा ढूंढते नजर आ रहे हैं। इन बच्चों से जब कबाडा चुनने की वजह पूछी गई तो इन्होंने कुछ नहीं बताया और चुपचाप चल दिये। बता दें कि नगर में ऐसी तस्वीर कई स्थानों पर आसानी से देखने को मिल जाती है। मगर इन तस्वीरों को बदलने के लिए कोई स्थानीय स्तर पर समाजसेवी, अधिकारी और नेता सामने नहीं आ रहा है।

श्रम विभाग हर साल बच्चों को बालश्रम मुक्त करने का अभियान चलाता है लेकिन यह अभियान महज कागजों में ही पूरा हो जाता है। हकीकत तो यह है कि शहर में आज भी व्यापक स्तर पर बाल श्रमिकों से श्रम करवाया जा रहा है। दूसरी तरफ नया स्कूल सत्र को शुरू हुए दो माह बीत चुके हैं लेकिन सरकार के विशेष अभियान के तहत इन कबाड़ चुनने वाले बच्चों का स्कूलों में दाखिला नहीं कराया गया है।बताया जाता है कि यह बच्चे अपने परिवार का पालन पोषण करने के लिए पढाई करने की बजाए कबाड़ चुनते हैं।

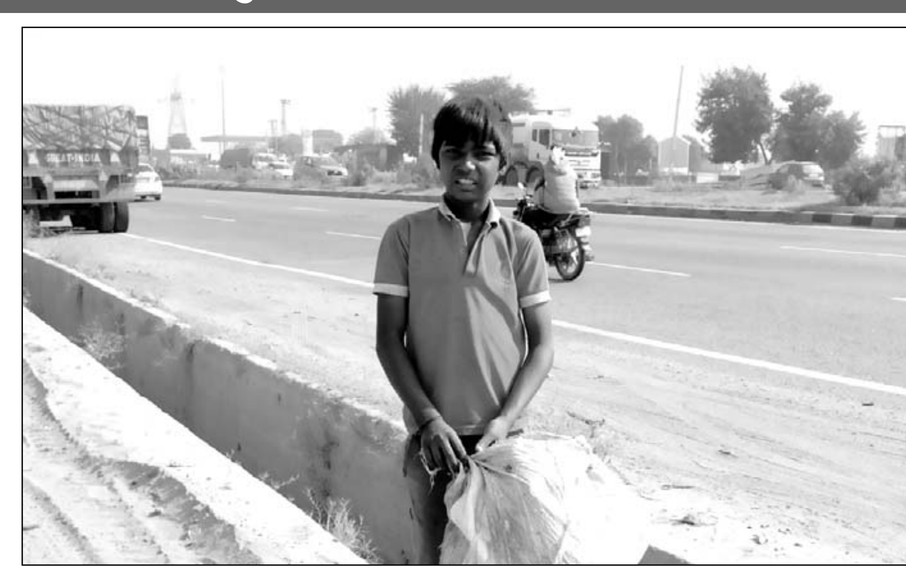

पावटा उपखंड के सर्विस रोड़ पर कचरा बीनता बच्चा।

■ इन बच्चों को भरपेट भोजन तक नहीं मिल पाता है

उल्लेखनीय है कि कचरा बीनने वाले बच्चों के पालक भी अपनी जिमेदारी नहीं निभा रहे हैं। जिस वजह से इन बच्चों को भरपेट भोजन तक नहीं मिल पाता है।

इससे ये बच्चे अपना पेट भरने के लिए दिनभर कचरे के ढेरों से खाली बोतल, प्लास्टिक व लोहा चुनकर भंगार में बेचकर अपना पेट भर रहे हैं। गौरतलब हो कि अगर इन बच्चों के अभिभावक इन्हें सरकारी स्कूल में दाखिला दिलाएं तो इन बच्चों को अच्छी शिक्षा मिले अथवा ना मिले लेकिन एक वक्त का मध्याह्न भोजन जरूर मिलेगा। ज्ञात हो शासन की ओर से स्कूलों में बच्चों को पुस्तकें सहित स्कूल की यूनिफॉर्म भी उपलब्ध कराती है लेकिन इन बच्चों के पालक अपनी जिमेदार नहीं निभा रहे हैं ।

राशिफल

पंडित अनिल शर्मा

सोमवार 29 नवम्बर, 2021

मार्गशीर्ष मास कृष्ण पक्ष, दशमी तिथि, सोमवार, विक्रम संवत 2078, उत्तरा फाल्गुनी नक्षत्र रात्रि 9:42 तक, प्रीति योग रात्रि 2:49 तक, वणिज करण सायं 4:52 तक, चन्द्रमा आज कन्या राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य–वृश्चिक, चन्द्रमा–कन्या, मंगल–तुला, बुध–वृश्चिक, गुरू–कुम्भ, शुक्र–धनु, शनि–मकर, राहु–वृष, केतु–वृश्चिक राशि में।

कुमार योग रात्रि 9:42 से आरम्भ होगा। भद्रा सायं 4:52 से रात्रि 4:14 तक रहेगी। मंगल उदय पूर्व में प्रातः 7:23 पर होगा। आज भगवान महावीर तप कल्याणक दिवस है।

श्रेष्ठ चौघड़िया: अमृत सूर्योदय से 8:19 तक, शुभ 9:38 से 10:56 तक, चर 1:33 से 2:52 तक, लाभ–अमृत 2:52 से सूर्यास्त तक।

राहूकाल: 7:30 से 9:00 तक। सूर्योदय 7:01, सूर्यास्त 5:29

मेष
व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। चलते कार्यों के संबंध में उचित सोच–विचार होगा। आय में वृद्धि होगी। परिवार में मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।

वृष
घर–परिवार में अतिथियों का आगमन रहेगा। पारिवारिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। नौकरीपेशा व्यक्तियों को उच्चाधिकारियों की नाराजगी का सामना करना पड़ सकता है।

मिथुन
परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। परिजनों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। व्यावसायिक स्थिति में सुधार होगा।

कर्क
आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक स्थिति ठीक रहेगी। परिवार में मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।

सिंह
व्यावसायिक कार्यों से संबंधित कार्य योजना बन सकती है। व्यावसायिक कार्यों के संबंध में उचित परामर्श मिलेगा। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

कन्या
आर्थिक मामलों में परेशानी का सामना करना पड़ सकता है। धन हानि हो सकती है। मन में असंतोष बना रहेगा। अनर्गल कार्यों में समय खराब होगा।

तुला
आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी। परिवार में अतिथियों का आगमन रहेगा।

वृश्चिक
व्यावसायिक कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। व्यावसायिक कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी। आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। परिवार में मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।

धनु
व्यावसायिक कार्यों के लिए बाहर जाना पड़ सकता है। नौकरीपेशा व्यक्तियों को भागदौड़ रहेगी। अनावश्यक धन खर्च होगा।

मकर
अपनी कार्य योजना को सीमित रखें। नवीन कार्यों को टालना ठीक रहेगा। यात्रा में परेशानी का सामना करना पड़ सकता है।

कुंभ
व्यावसायिक सफलता से मनोबल बढ़ेगा। व्यावसायिक कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। आर्थिक स्थिति में सुधार होगा।

मीन
अस्त–व्यस्त कार्य व्यवस्थित होने लगेंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। व्यावसायिक यात्रा सफल रहेगी।